रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।

शब्दार्थ-

रहिमन – रहीम (कवि का नाम)

देखि – देखकर

बड़ेन – बड़े लोगों को

लघु – छोटा, तुच्छ

न दीजिये डारि – मत छोड़िए, त्याग मत कीजिए

काम आवे – उपयोग में आता है

कहा करे तलवारि – तलवार क्या कर सकती है (तलवार से सिलाई नहीं हो सकती)

भावार्थ- *किसी भी छोटी चीज़ को बेकार मत समझिए, क्योंकि हर चीज़ का अपना महत्व होता है। जैसे कि जब सिलाई करनी हो तो सुई की ही जरूरत होती है, तलवार से वह काम नहीं हो सकता।*

अर्थात् बड़ों का साथ मिलने पर छोटों को नहीं भूलना चाहिए। सभी का अपना एक अलग महत्त्व है।

तरुवर फल नहिं खात हैं सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।

शब्दार्थ-

तरुवर – वृक्ष (पेड़)
फल नहिं खात हैं – अपने फल खुद नहीं खाते
सरवर – तालाब
पियहिं न पान – अपना पानी खुद नहीं पीते
कहि रहीम – रहीम कहते हैं
पर काज हित – दूसरों के हित के लिए
संपति सँचहि सुजान – बुद्धिमान लोग धन-संपत्ति को इकट्ठा परोपकार के लिए करते हैं

भावार्थ- *रहीम के अनुसार पेड़ अपने फल खुद नहीं खाते, तालाब अपना पानी खुद नहीं पीते। इसी तरह, समझदार लोग अपनी संपत्ति दूसरों की भलाई के लिए रखते हैं, न कि सिर्फ अपने लिए।*
कहने का तात्पर्य यह है कि प्रकृति एक जैसी भावना से बिना किसी लालच के सभी को लाभ पहुँचाती है, उसी तरह मनुष्य का स्वभाव भी परोपकारी होना चाहिए अर्थात् दूसरों के हित के लिए होना चाहिए।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।

शब्दार्थ-

छिटकाय – झटके से खींचकर

टूटे से फिर ना मिले – टूटने के बाद पहले जैसा नहीं जुड़ता

मिले गाँठ परि जाय – यदि जोड़ भी लिया जाए तो उसमें गाँठ पड़ जाती है

भावार्थ- *प्रेम एक नाज़ुक धागे की तरह होता है, इसे तोड़ना नहीं चाहिए। यदि यह धागा टूट जाता है, तो उसे फिर से जोड़ना मुश्किल होता है और जोड़ने पर भी उसमें गाँठ पड़ जाती है, यानी रिश्ता पहले जैसा नहीं रहता।*

कहने का तात्पर्य यह है कि लोगों के साथ प्रेम के रिश्ते रखने चाहिए यदि रिश्ता ख़राब होता है तो जितना भी सुधार लो कहीं न कहीं कुछ मनमुटाव रह ही जाता है।